

&gt;

Title: Problems faced by residents and farmers in Campbell Bay in Andaman & Nicobar Islands.

**श्री विष्णु पट शर्य (अंडमान और निकोबार टीपसगूह):** सभापति महोदय, मैं अंडमान निकोबार टीपसगूह, जो भारत का आखिरी ठिरखा है, जिसका नाम कैम्बल बे है, जिसे इंदिरा गांधी के नाम पर इंडिरा पाइंट भी लोग कहते हैं। उस धरती पर 2004 में सुनामी आई और बड़ी तबाही हुई। भारत सरकार ने बड़े-बड़े डॉयलॉन मारे कि सुनामी शैल्टर के नाम पर उनका यह कर दिया, वह कर दिया देश का कोई ऐसा मंत्री नहीं बवा, जो वहां घूमकर नहीं आया हो। तोकिन आज छातत वर्षा है, मैं आपको बताना चाहता हूँ।

1980 में भारत में एक सर्विसमेन को, आर्मी के लोगों को लेकर इंडोनेशिया के बगल में कैम्बल बे में बिठाया गया था। सुनामी के पश्चात् परमानेंट शैल्टर्स बने, करोड़ों रुपये का घोटाला किया, तोकिन अंडमान निकोबार के जो कॉमर्शियल ट्रीज़ हैं, जिनकी तमाई 80 फीट से 200 फीट होती है, शैल्टर्स के बगल में वे कॉमर्शियल ट्रीज़ खड़े हुए हैं। उस स्थान का नाम गांधीनगर और लक्ष्मीनगर है। वहां पी.एच.सी. के बगल में, शैल्टर्स के बगल में बड़े वाले पेड़ खड़े हैं। उनको काटने के नाम पर इसका-उसका बढ़ाना कर रहे हैं। उनको तुरन्त कटवाया जाये, यह मेरी पहली मांग है।

दूसरी मेरी मांग है कि कैम्बल बे को जीरो पोइंट से... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Please raise only one point.

**SHRI BISHNU PADA RAY:** It is only the issue of Campbell Bay. I am not diverting from it. कैम्बल बे को जीरो पोइंट से बाजार तक सुनामी के नाम पर डीपिंग वाल बनाई गई, सी वॉल बनाई गई, उस पर 46 करोड़ रुपया खर्च हुआ। वह वॉल तो बना दी गई, तोकिन वॉल के होल से पानी आता है, जाता है। मैं मांग करूँगा कि उस एरिया में मिट्टी फिल-अप करके जो पंचायत का मार्केट है, जो हॉज़पाइप है, वहां शॉपिंग कॉम्पलैक्स बनाने के लिए लैंड फिल करें।

आखिरी कैम्बल बे की एक और समस्या किसान भाईयों की है। करीब-करीब 2200 किसान लोगों के जो खेत गांधीनगर कॉमर्शियल बाजार से शार्टीनगर तक डूबे पड़े हैं, आज तक उस जमीन पर डूबे पड़े हैं। मैं मांग करूँगा कि तुरन्त गैरियन बॉक्स केबिन जो बनाया गया, जैसा पुदुच्चेरी में बनाया गया, वैसा केबिन बनाया जाये। वहां मिट्टी भर दी जाये और रस्ता गेट बना दिया जाये और किसानों की जमीन में अर्थ फिल किया जाये, यह हमारी मांग है।